भजन

रसना मीठी मीठे पिया की,देती रूह को प्यार
सुख भरे रसना में सारे,आवे रूह को करार
इस्के रस से भरी है रसना,न्यामतें हैं अपार
पाके आशिक प्यारी इसमें,डूबें बारम्बार
मेरे माशूक पिया,प्यारी इनकी जुबां
जुबां से जब बोलें,आशिक झूमें वहाँ
1–सुख पावें आशिक,पिया हर अंग से,
उसपे ये रसना का सुख
हर अंग में पिया,इश्क भरा है,रसना के सुख बड़े गुझ
मीठी जुबां से मीठी बातें,रूह सों करते पिया
जायें आशिक वारी वारी,मीठी रसना सराब
इस्के रस से भरी है रसना,न्यामतें हैं अपार
पाके आशिक....
2–मीठी जुबां पिऊ मीठे वचन,मीठा हक मीठा रूहों प्यार
मीठी रूह पावे मीठे अर्स की, जो मीठा करें विचार
मीठी मीठी माहें मीठी रसना,रस रसीली बान
सुख के मांहे अलेखे सुख हैं,क्यूं कहूँ रसना सुभान
हक रसना बोले अर्स में,जिन किन को वचन
सो सब कारन जानियो,है वास्ते सुख रूहन
पशु पक्षी हक रसना को सुनकर,नाचें होकर मग्न
कई तरह के खेल दिखावें,सुख देवे रूहन
मेरे माशूक....

भजन

3– दायम इस्क अपना बड़ा है,रूहों कहा,अपनी रसना
मैं ही हूँ तुम्हारा आशिक रूहो,फिर न ये अब तुम कहना
इश्क रब्द कर बैठीं रूहें,हक रसना मानी न
याही रसना बल वास्ते,खेल देखाया सुभान
रसना के हुकम से ही सारा,खेल ये है बना
हुकम में भी और हुकम कई,खड़े हजूर यहाँ
मेरे माशूक...

4– मीठी रसना के हुकम से,इल्म अपना दिया
रसना के मीठे वचनों से पिया ने,रूह को खड़ा कर दिया
सिफत रूहों की गाई जग में,ऐसी पिऊ रसना
रूह रसना से मुक्ति मिलेगी,ऐसी मीठी जुबां
दुनी को कायम भिस्त मिलेगी,पिऊ रसना मेहरबां
मीठे सुख फिर सबको मिलेंगे,अखण्ड होगे जहां
मेरे माशूक....